घास के मूसल

जयप्रकाश भारती



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

घास के मूसल

जयप्रकाश भारती

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

दिनेश शाह

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

घास के मूसल

श्रीकृष्ण की कहानी बड़ी रोचक है। जितना सुनें, उतना ही मजा आता है। अपने देश को बनानेवालों में कृष्ण का नाम आता है। कृष्ण ने अनेक दैत्यों को मारकर धरती का भार हल्का किया था। कृष्ण ने यादवों की रक्षा की और उन्हें राज्य करने की जिम्मेदारी सौंपी। द्वारिका जैसी सुंदर, सुरक्षित नगरी को अपनी राजधानी बनाया। सारे देश में उनका नाम और उनकी कीर्ति गूंज रही थी।

महाभारत की लड़ाई के बाद छत्तीस वर्षों तक कृष्ण द्वारिका में राज्य करते रहे। उनके राज में यादव राजकुमारों को कोई कमी नहीं थी। भोग-विलास के कारण उनमें शील-संयम न रहा। किसी दुश्मन का भय तो उन्हें था ही नहीं। धन और ताकत के नशे में वे चूर रहते थे, और किसी का भी अपमान करने से नहीं चूकते थे।

एक अच्छे राजा की खराब प्रजा के रूप में वे बदनाम थे। यदुवंशी समझते थे

कि श्रीकृष्ण हमारे ही कुल के हैं, इसलिए हम सबसे अच्छे हैं। कृष्ण की ताकत और कृष्ण के प्रभाव को वे अपनी ही ताकत समझने लगे थे। उनमें आपस में भी मेल नहीं था। बराबर लड़ाई–झगड़ा चलता रहता था। अपने गलत कामों के कारण वे अपने विनाश के बीज बो रहे थे।

द्वारिका के पास ही एक जगह थी पिंडारक। वहां अनेक बड़े ऋषि-मुनि ठहरे थे। शैतान नौजवानों को खिलवाड़ सूझी। सांब नाम के एक राजकुमार को दुल्हनों की तरह सजाया। सुंदर कपड़े पहनाये। साज–सिंगार किया। पेट ऐसा कर दिया कि बड़ा दिखायी दे। सारी तैयारी करके वे उसे लेकर ऋषियों के पास पहुंचे और बोले, "क्षमा करें महाराज, यह सुंदरी गर्भवती है। यह आपसे कुछ पूछना चाहती है, लेकिन इसे लाज आ रही है। आप सब बड़े ज्ञानी-गुणी हैं, आप बतायें की इसे लड़की होगी या लड़का?"

युवकों के इस व्यवहार से सभी ऋषि बहुत नाराज हो उठे। उन्होंने कहा, "मूर्खो, तुम्हारी यह लड़की एक ऐसा मूसल पैदा करेगी, जो तुम्हारे कुल का नाश कर देगा!"

शाप सुनकर सब डर के मारे भागे। दूर जाकर उन्होंने सांब के कपड़े खोले तो उसमें से लोहे का एक मूसल मिला। अब तो वे और घबराये। सब यादव कुमार राजा उग्रसेन की सभा में पहुंचे और सारी घटना कह सुनायी। मुनियों का शाप सुनकर राजदरबार में भी भय छा गया। सब कहने लगे कि ऋषियों का शाप कभी झूठा नहीं हो सकता।

राजा उग्रसेन ने उस मूसल का चूरा-चूरा करवाया और उस चूरे को समुद्र में फेंकने का हुक्म दिया। यादवों ने सोचा कि अब डर की कोई बात नहीं है। समुद्र से निकलकर वह मूसल बाहर थोड़े ही आयेगी। ऋषियों का शाप वे भूल गये।

मूसल के वे कण लहरों के साथ-साथ किनारों पर आते रहे और थोड़े दिनों बाद वहां एक घास उगी, जिसे एरक कहते थे। लोहे के कुछ टुकड़ों को मछलियों ने निगल लिया। उसमें से एक मछली एक मछुवे के जाल में जा फंसी। उसके पेट से निकले लोहे को जरा नाम के शिकारी ने खरीद लिया और अपने बाण की नोक में लगा लिया।

कुछ दिन बाद की बात है। यादव लोग समुद्र के किनारे सैर-सपाटे के लिए गये थे। उनमें से कुछ नशे में थे। सब नाचते-गाते, आनंद मनाते घूम रहे थे। महाभारत की लड़ाई में यादव-कुल का वीर कृतवर्मा कौरवों के पक्ष से लड़ा था। सात्यकि पांडवों की तरफ से लड़ा था। नशे की हालत में वे दोनों आपस में बहस करने लगे।

सात्यकि ने कृतवर्मा की हंसी उड़ाते हुए कहा, "अरे कृतवर्मा, तुम कैसे वीर हो? सोता हुआ आदमी तो मुर्दे के समान होता है। तुमने सोते हुए पांडव-कुमारों को मारा और ऐसा नीच काम करके सारे यादव कुल को अपमानित किया। तुम्हें धिक्कार है!"

दूसरे कई लोगों ने सात्यकि का समर्थन किया और कृतवर्मा का अपमान किया। कृतवर्मा भी आपे से बाहर हो गया। हाथ उठाकर, मुक्का तानते हुए बोला, "सात्यकि, तुम मुझ पर लांछन लगा रहे हो। तुमने जमीन पर बैठे, हाथ कटे भूरिश्रवा को मारकर कौन-सी बहादुरी की थी? तुम जैसा कसाई मुझे उपदेश देने चला है!"

कृष्ण ने नाराज होकर कृतवर्मा की ओर देखा। कृतवर्मा पर उसका कुछ असर न हुआ। सब एक–दूसरे पर बढ़-चढ़कर दोष लगाने लगे। इसी कहा–सुनी और गर्मागर्मी में कृष्ण की पत्नी सत्यभामा के पिता पर भी कीचड़ उछाले गये। सत्यभामा रोने लगीं। यह देखकर सात्यकि गुस्से से कांपने लगा और गरज-कर बोला, "आज इस पापी कृतवर्मा का अंत आ गया है।"

देखते-ही-देखते सात्यकि ने अपने तलवार से कृतवर्मा की गर्दन उड़ा दी। बस, फिर क्या था, वहां सब एक-दूसरे पर वार करने लगे। कृष्ण ने उनको रोकना चाहा लेकिन जैसे सबके सिर पर भूत सवार हो गया था। कई लोगों ने मिलकर सात्यकि को घेर लिया और उसे मार डाला।

अब कृष्ण से न रहा गया। समुद्र किनारे लंबी-लंबी एरक घास उगी थी। उसी घास को उखाड़कर वे लड़नेवालों पर फेंकने लगे। उन्हें ऐसा करता देखकर दूसरे यादवों ने भी ऐसा ही किया। ऋषियों के शाप के कारण, घास के पौधे उनके लिए मूसल जैसे बन गये। उसकी



" उसी घास को उखाड़कर वे लड़नेवालों पर फेंकने लगे ।"

चोट से वे मरने लगे। पिता ने बेटे और बेटे ने पिता को बिना सोचे-समझे मार डाला। सैर-सपाटे के लिए गया यादव-कुल लाशों की ढेर में बदल गया।

अंत में कृष्ण, बभ्रु और कृष्ण का सारथी दारुक के अलावा वहां कोई जिंदा न बचा। शोक में डूबे दारुक ने कहा, "हे कृष्ण, यदुकुल का नाश तो हो गया। चलिए, बलराम के पास चलें।"

बलराम को खोजते हुए वे इधर-उधर घूमने लगे। उन्होंने जंगल के ठीक बीच में, एक सुनसान जगह पर बलराम को समाधि में बैठे देखा। यादवों की आपसी लड़ाई से निराश होकर वे अपनी मौत के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

कृष्ण ने दारुक से कहा, " दारुक, तुम हस्तिनापुर जाओ और अर्जुन को यादव कुल के नाश की खबर बताओ। अर्जुन से यह भी कहो कि यहां की स्त्रियों, बूढ़ों और बच्चों की रक्षा के लिए वे तुरंत यहां पहुंचें।"

पास बैठे बभ्रु से कृष्ण बोले, " मित्र, तुम नगर में जाओ और स्त्रियों-बच्चों की देखभाल करो।"

बभ्रु कुछ ही दूर जा सके थे कि किसी शिकारी ने उन पर हमला किया और वे वहीं ढेर हो गये। कृष्ण ने अपनी आंखों से यह देखा, और फिर खुद ही नगर में गये। वसुदेव के पास जाकर बोले, "पिताजी, हमने अपना दूत हस्तिनापुर भेजा है। यदुकुल के नाश की खबर पाते ही अर्जुन यहां आयेंगे। जबतक वे यहां आयें, आप स्त्रियों-बच्चों की देखभाल कीजिए। बाद में हमारे मित्र अर्जुन जैसा कहें, वैसा ही कीजिए। मैं बड़े भाई बलराम के पास जाता हूं।"

जंगल में वापस आकर कृष्ण ने देखा कि पेड़ के नीचे बलराम का मुर्दा शरीर पड़ा है। भाई की मौत से दुखी होकर बेचैन कृष्ण जंगल में इधर-उधर घूमने लगे। परेशान मन और थका तन लेकर आखिर वे एक पेड़ से टिककर आराम करने लगे।

इसी समय जरा नाम का बहेलिया उधर आया। दूर से उसने कृष्ण के लाल-लाल तलवे को हिरण का मुंह समझा और साधकर निशाना लगाया। उसका तीर कृष्ण के तलवे में जा धंसा। जब वह अपना शिकार उठाने के लिए वहां आया तो कृष्ण को देखकर हैरान रह गया। वह कृष्ण के कदमों में गिरकर



"यह तो तूने मेरे मन का ही काम किया है।"

रो पड़ा, "हाय, मैंने यह क्या किया?"

कृष्ण ने उससे कहा, "अरे भाई, तू डर मत। यह तो तूने मेरे मन का ही काम किया है। जा, तुझे स्वर्ग में जगह मिलेगी।"

तीर विष से बुझा था। तेजी से उसका असर होता चला गया। अनेक देवी-देवता, ऋषि-मुनि वहां जमा हो गये, और आकाश से फूलों की बारिश होने लगी।

कृष्ण भी अपना शरीर छोड़कर चले गये।

उधर कृष्ण का सारथी दारुक हस्तिनापुर पहुंचा। यादव कुल के नाश की सारी कहानी उसने पांडवों को सुनायी। सुनकर सभी बड़े दुखी हुए। अर्जुन तुरंत दारुक के साथ द्वारिका को चल पड़े।

वहां पहुंचकर अर्जुन ने देखा कि द्वारिका नगरी अनाथ-सी हो गयी है। अर्जुन को देखते ही स्त्रियां जोर-जोर से रोने लगीं। अर्जुन की आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। वे बड़ी देर तक कृष्ण के बारे में सोचते रहे। फिर वे उनके घर गये। वहां उन्होंने बूढ़े वसुदेव को देखा। रोते हुए उन्होंने वसुदेव के चरण छुए।

अर्जुन ने मंत्रियों से कहा, "हम रानियों और बच्चों को लेकर इंद्रप्रस्थ जाते हैं। नगर के दूसरे लोगों के साथ तुम लोग भी वहां आ जाओ। कृष्ण हमसे हमेशा कहा करते थे कि यह नगर थोड़े ही दिनों में समुद्र में डूब जायेगा। इसलिए हम यहां से सातवें दिन चले जाना चाहते हैं। सवारियां तैयार रखना।"

अर्जुन की बात सुनकर सब जल्दी-जल्दी तैयारी करने में जुट गये। अर्जुन ने वह रात किसी तरह कृष्ण के घर में बितायी।

दूसरे ही दिन महात्मा वसुदेव की भी मृत्यु हो गयी। अर्जुन ने उनका अंतिम संस्कार कराया। उसके बाद अर्जुन वहां गये, जहां यादव वीर मूसलों से मरे थे। उन्होंने बड़े-छोटे सभी का अंतिम संस्कार करवाया।

सातवें दिन दुख से व्याकुल नागरिकों को घोड़े, बैल और ऊंट जुते रथों पर बिठाकर अर्जुन इंद्रप्रस्थ को रवाना हो गये।

उन लोगों के निकलते ही समुद्र धीरे-धीरे द्वारिका को डुबोने लगा। ●

हाथी की पुकार

दो गंधर्व थे– एक था हाहा, एक था हूहू। दोनों खूब गाते, खूब बजाते। न मालूम कितनी कलाओं में माहिर थे। एक दिन दोनों में होड़ लग गयी।

"गाने और बजाने में मैं बेजोड़ हूं," हाहा ने कहा।

हूहू कब चुप रहनेवाला था। बोला, "तुम मेरे मुकाबले कहां टिकोगे? मैंने बड़ी–बड़ी सभाओं में प्रशंसा पायी है।"

दोनों गंधर्व इंद्र के दरबार में पहुंचे। बहस वहां भी जारी थी। इंद्र के दरबार में एक-से-बढ़कर-एक गुणी थे।

हाहा, हूहू ने इंद्र से कहा, "देवराज, आप ही हमारे झगड़े का फैसला करें। बताइए कि गाने-बजाने में हमदोनों में से कौन अच्छा है। आप तो रात-दिन कलाकारों से घिरे रहते हैं। आपका फैसला हम दोनों मान लेंगें।"

हाहा ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। दरबारियों को दोनों की कलाकारी एक-सी लगी। यह तय न हो पाया कि इन दोनों में कौन अच्छा कलाकार है।

इंद्र ने कहा, "तुम दोनों एक–दूसरे से बढ़कर हो। मेरे लिए यह आसान नहीं है कि किसी एक को, दूसरे से अच्छा बता सकूं। ऋषि-मुनियों में देवल मुनि बहुत पहुंचे हुए हैं। वे संगीत-कला की बारीकियों को खूब समझते हैं। वे इस बारे में सही फैसला दे सकेंगे।"

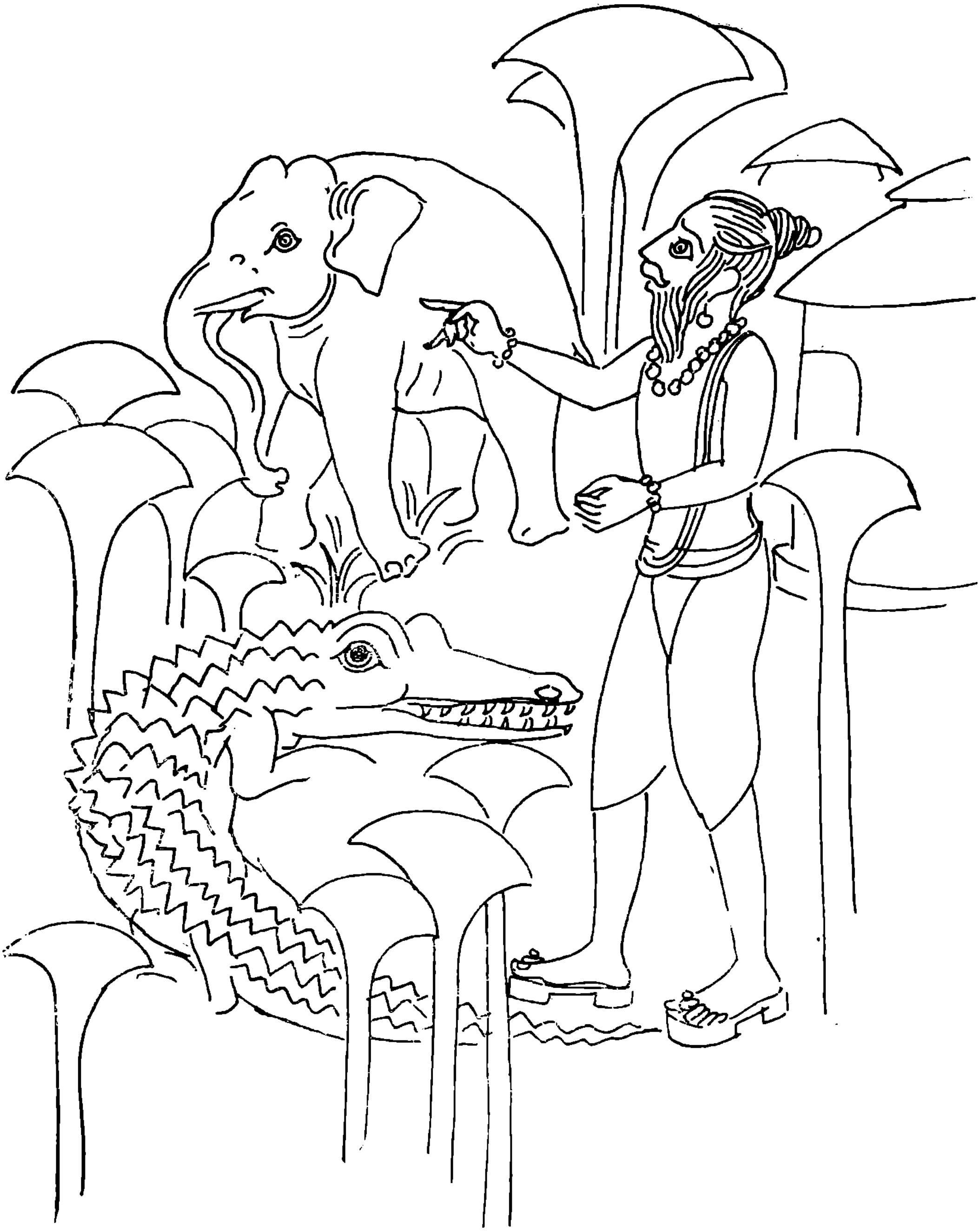
हाहा और हूहू दोनों ने देवराज को प्रणाम किया और वहां से चल दिए देवल मुनि के पास। मन-ही-मन दोनों विजय की उम्मीद लगाये थे।

दोनों देवल मुनि के आश्रम में पहुंचे। मुनि को प्रणाम किया और बोले, "हे मुनि, महाराज इंद्र ने हमें भेजा है। हम दोनों में से संगीत में कौन अधिक उस्ताद है, इसका फैसला आप कर दें।"

दोनों बारी-बारी से अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे, गाने-बजाने लगे। काफी देरतक अपने-अपने हुनर का प्रदर्शन करने के बाद दोनों इंतजार करने लगे कि अब मुनि जी कुछ फैसला देगें। लेकिन देवल मुनि तो एकदम चुप्पी साधे बैठे रहे।

दोनों गंधर्व देवल मुनि से नाराज हो गये। कहने लगे, " अरे, यह तो निपट मूर्ख है। गाने-बजाने के बारे में इसे कुछ आता नहीं है। कोई पारखी होता तो हमारी सुर-लहरी से झूमने लगता। हम बेकार ही इस नासमझ के चक्कर में पड़े!"

हाहा, हूहू की ऐसी घमंडी बातें देवल मुनि ने सुनीं तो उन्हें गुस्सा आ गया। मुनि ने उन दोनों को शाप दे दिया, " तुम दोनों अपने घमंड में चूर होकर मुझे मूर्ख बना रहे हो! अरे हाहा, जा तू हाथी हो जा। पहाड़ों की गुफाओं में जाकर चिंघाड़ता फिर। वहां पत्थर ही तेरा संगीत सुनेंगे। और मूर्ख हूहू, तू घड़ियाल बन



" मैं अपना शाप लौटा तो नहीं सकता ।"

जा। पानी में पड़े-पड़े गला फाड़ते रहना।"

महात्मा देवल की बातें सुनकर दोनों गंधर्व डर गये। देवल मुनि को प्रणाम करके बोले, "हे देव, हम पर दया कीजिए। ऐसा कुछ उपाय बताइए कि हम आपके शाप से छूट जायें।"

देवल मुनि ने कहा, "मैं अपना शाप लौटा तो नहीं सकता। लेकिन तुमदोनों की आपसी लड़ाई ने जैसे आज तुम्हें मुसीबत में डाल दिया है, उसी तरह ऐसी ही आपसी लड़ाई तुम दोनों को इस शाप से बचायेगी।"

क्षीर सागर के करीब एक लंबा-चौड़ा त्रिकूट नाम का विशाल पहाड़ था। पहाड़ की चोटियों पर तरह-तरह की लताओं, झाड़ियों और घने पेड़ों का जंगल था। झर-झर बहते झरने देवताओं और मुनियों को भी मोह लेते थे। उस पहाड़ पर शेर, हाथी, हिरण, भेड़िया, सूअर आदि जानवर रहते थे।

कहते हैं, उस पहाड़ की एक चोटी पुखराज की थी। दूसरी चोटी चांदी की थी। चांद और सूरज की रोशनी से इन चोटियों की चमक जंगल में उजाला फैला देती थी।

उसी पहाड़ के नीचे ठंडे पानी का एक बड़ा सुंदर सरोवर था। उसमें लाल, नीले और सफेद रंग के बड़े-बड़े कमल खिलते थे। सरोवर के किनारे-किनारे पेड़ों की घनी कतार थी, बांस के झुरमुट थे। हवा चलती थी तो लगता था जैसे सीटियां बज रही हों। पेड़ों पर फलों से लदी लताएं लिपटी थीं। सरोवर में हंस तैरते थे। मछलियां, कछुए तो सरोवर में थे ही, बड़े-बड़े मगर भी उसमें रहा करते थे।

उस जंगल में एक हाथी रहता था। हाथी क्या था मानो काला पहाड़ था। उसकी गंध से ही जंगल के जानवर डर से भाग जाते थे।

एक दिन हाथियों का यह राजा अपने झुंड के साथ पानी पीने सरोवर पर गया और सरोवर में घुसकर खेल करने लगा। सूंढ़ से भर-भरकर वे एक-दूसरे पर पानी उछालने लगे। इस खेल में मस्त हाथियों ने जैसे अपने को भुला ही दिया।

तभी अचानक हाथियों के राजा का



" घड़ियाल की पकड़ से उन्होंने हाथी का पांव छुड़ाया ।"

एक पांव किसी ने जकड़ लिया। कौन था यह? यह था सरोवर में छिपा घड़ियाल। हाथी ने जोर लगाया, और किनारे की ओर आने की कोशिश की। घड़ियाल ने जोर लगाया और उसे गहरे पानी में खींच ले जाने की कोशिश की।

इस तरह खींच-तान चलती रही। कभी हाथी घड़ियाल को खींचकर थोड़ा किनारे की ओर ले आता, तो कभी घड़ियाल उसे खींचकर बीच सरोवर में ले जाता। दूसरे हाथियों ने अपने राजा की मदद करनी चाही। उन्होंने एक साथ जोर लगाया। पर कुछ भी नतीजा न निकला। एक-एक कर उसके सभी साथी उसे छोड़कर चले गये। हाथी को बड़ा दुख हुआ।

हाथी और घड़ियाल में होड़ लगी हुई थी। घड़ियाल जल का जीव ठहरा। उसकी पकड़ से हाथी को छुटकारा कहां! समय बीतता गया, बीतता गया। हाथी के प्राणों पर आ बनी, उसके साहस ने जवाब दे दिया।

अब क्या करूं, कैसे विपत्ति से छुटकारा पाऊं, वह यही सोचने लगा। हारकर उसने भगवान की याद की "हे भगवान, जिसका कोई सहारा नहीं है, तुम उसकी मदद करते हो। आज मैं बेसहारा हो गया हूं। मेरी मदद करो, मुझे बचाओ।"

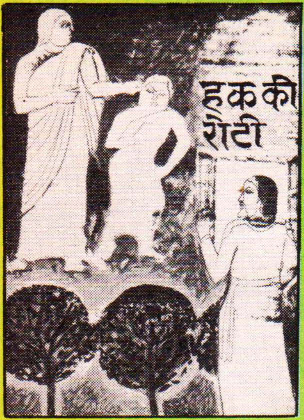
हाथी इस प्रकार तरह-तरह से भगवान को पुकारता रहा, गिड़गिड़ता रहा।

भगवान विष्णु ने हाथी की पुकार सुनी। गरूड़ पर सवार होकर वे चल पड़े। हाथी अपनी आंखें बंद किए भगवान से विनती कर रहा था। उसको डरा देखकर, भगवान गरूड़ से सीधे सरोवर में कूद पड़े। भगवान ने हाथी को सरोवर से बाहर निकाला, साथ ही घड़ियाल को भी खींचकर बाहर निकाल लिया। घड़ियाल की पकड़ से उन्होंने हाथी का पांव छुड़ाया।

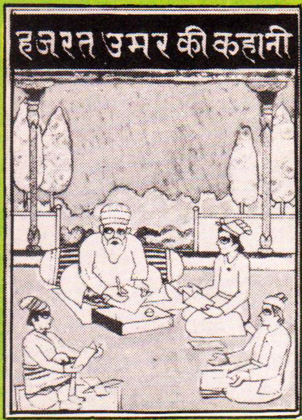
भगवान ने उन दोनों को आशीर्वाद दिया, और दोनों अपने पहले रूप में आ गये– एक हाहा बन गया और दूसरा हूहू बन गया।

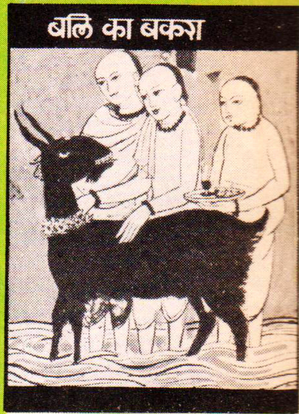
दोनों ने भगवान विष्णु को प्रणाम किया और भगवान की पूजा की।

बच्चों की कहानियां

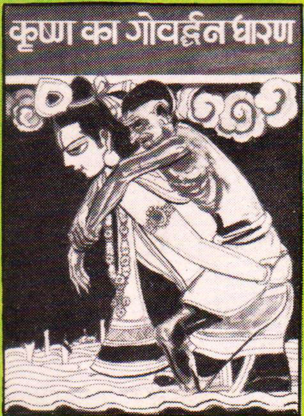






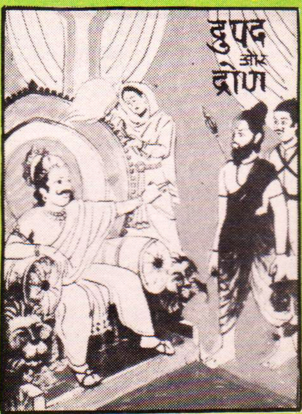


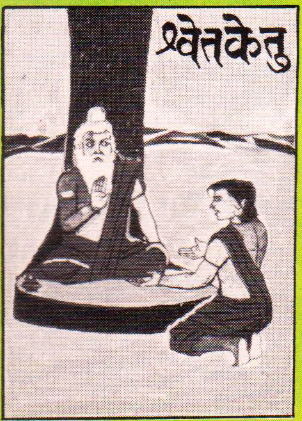
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२













बच्चों की कहानियां